आयाते शिफ़ा

बीमारियों से शिफ़ा और जादू,जिन्नात व शयातीन
से बचाओ के लिए

eCard

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ
وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝

और हम क़ुरआन से जो नाज़िल करते हैं,वो मोमिनों के लिए शिफ़ा
और रहमत है,और ज़ालिमों को ख़सारे ही में ज़्यादा करता है

(بنی اسرائیل:82)

مَا اَنْزَلَ اللّٰهُ دَاءً اِلَّا اَنْزَلَ لَهُ شِفَاءً

अल्लाह ने कोई ऐसा मर्ज़ नहीं उतारा जिसके लिए उसने शिफ़ा ना उतारी हो.

(صحیح البخاری:5678)

आयाते शिफ़ा

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ مٰلِكِ يَوْمِ 1
الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ
عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○ (الفاتحة :1-7)

सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो रब है तमाम जहानों का- बहुत मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है- बदले के दिन का मालिक है- हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ़ तुझसे हम मदद चाहते हैं- हमें सीधा रास्ता दिखा दिखा- उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इनआम किया,उनका नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ और ना गुमराह होने वालों का.

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ 2
مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ
اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ
بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ○ (البقرة:255)

अल्लाह (वो है कि)उसके सिवा कोई माअबूद नहीं,वो ज़िन्दा है,हर चीज़ को क़ायम रखने वाला है,ना उसे ऊँघ पकड़ती है और ना नीन्द,उसी का है जो

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है,कौन है जो उसके पास उसकी इजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश कर सके,जानता है जो कुछ उनके सामने और जो उनके पीछे है और वो उसके इल्म में से किसी चीज़ का अहाता नहीं करते मगर जितना वो चाहे- उसकी कुर्सी आसमानों और ज़मीन को समाए हुए है और उसे उन दोनों की हिफ़ाज़त नहीं थकाती और वोही सबसे बुलन्द है,सबसे बड़ा है.

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ
بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟ قف لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ
قف وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ق غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝
لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا
مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا
تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا
وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا وقفه وَاغْفِرْ لَنَا وقفه
وَارْحَمْنَا وقفه اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

(البقرة286-285)

रसूल ईमान लाया उसपर जो उसके रब की तरफ़ से उसपर नाज़िल किया गया और सब मोमिन भी,सबके सब ईमान लाए अल्लाह पर,उसके फ़रिश्तों पर उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर,हम उसके रसूलों में से किसी में फ़र्क़ नहीं करते और वो कहते हैं हमने सुना और हमने इताअत की,तेरी बख़्शिश (मांगते हैं)ऐ हमारे रब और तेरी तरफ़ ही लौटना है. अल्लाह किसी को उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नही देता,उसी के लिए है जो उसने(नेकी) की और उस पर है जो उसने(गुनाह) कमाया,ऐ हमारे रब ! अगर हम भूल जाऐं या

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

हम ख़ता करलें तो हमें ना पकड़ना,ऐ हमारे रब ! हम पर वो बोझ ना डाल जैसा कि तूने हमसे पहले लोगों पर डाला,ऐ हमारे रब ! तू हमसे वो बोझ ना उठवा जिस (के उठाने) की ताक़त हम में नहीं हमसे दरगुज़र फ़रमा और हमें बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा,तू ही हमारा मौला है पस काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा.

حَسْبِىَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ 4
الْعَظِيْمِ ٥ (التوبة:129)

मुझे अल्लाह काफ़ी है,जिसके सिवा कोई माअबूद हक़ीक़ी नहीं,मैंने उस पर भरोसा किया और वो बड़े अर्श का रब है.

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ٥ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ٥ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ 5
مَآ اَعْبُدُ ٥ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ٥ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ٥
لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِىَ دِيْنِ ٥ (الكفرون:1-6)

कह दीजिए कि ऐ काफ़िरो ! जिनकी तुम इबादत करते हो मैं उनकी इबादत नहीं करता और जिसकी मैं इबादत करता हूँ उसकी तुम इबादत नहीं करते और जिनकी तुम इबादत करते हो उनकी मैं इबादत करने वाला नहीं हूँ और ना तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी मैं इबादत करता हूँ. तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन और मेरे लिए मेरा दीन.

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ٥ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ٥ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ٥ وَلَمْ يَكُنْ 6
لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ٥ (الاخلاص:1-4)

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

कह दीजिए ! वो अल्लाह एक है. अल्लाह बेनियाज़ है. ना उससे कोई पैदा हुआ और ना ही वो किसी से पैदा हुआ और ना ही कोई उसका हमसर है.

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ o مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ o وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا 7
وَقَبَ o وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ o وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا
حَسَدَ o (الفلق:5-1)

कह दीजिए ! मैं सुब्ह के रब की पनाह चाहता हूँ. हर उस चीज़ के शर से जो उसने पैदा की है और अंधेरी रात की तारीकी के शर से जब वो फैल जाए और गिरहों मैं फूंकने वालियों के शर से और हसद करने वाले के शर से जब वो हसद करे.

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ o مَلِكِ النَّاسِ o اِلٰهِ النَّاسِ o مِنْ شَرِّ 8
الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ o الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ o مِنَ
الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ o (الناس:6-1)

कह दीजिए! मैं लोगों के रब की पनाह चाहता हूँ. लोगों के मालिक. लोगों के माअबूद की. वसवसे डालने वाले,बार बार पलट कर आने वाले के शर से. वो जो लोगों के सीनों में वसवसा डालता है. जिन्नों और इन्सानों में से.

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ (صحیح مسلم:6880) 9

मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह के तमाम कलिमात के साथ,हर उस चीज़ के शर से जो उसने पैदा की है.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّهَامَّةٍ وَّمِنْ كُلِّ 10
عَيْنٍ لَّامَّةٍ (صحیح البخاری :3371)

मैं पनाह लेता हूँ अल्लाह के मुकम्मल कलिमात के ज़रिए हर एक शैतान से और हर ज़हरीले जानवर से और हर नुक़्सान पहुँचाने वाली नज़रे बद से.

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ 11
وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنِ (سنن الترمذی:3528)

मैं अल्लाह के तमाम कलिमात के साथ उसके ग़ज़ब,उसके अज़ाब,और उसके बन्दों के शर से पनाह चाहता हूँ और शैतानों के वसवसों और उससे कि वो मेरे पास हाज़िर हों.

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ الَّتِىْ لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّلَا 12
فَاجِرٌ مِّنْ شَرِّمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَ مِنْ شَرِّ
فِتَنِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمِنْ كُلِّ طَارِقٍ اِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ
يَّارَحْمٰنُ (المعجم الاوسط للطبرانی،ج:6،5411)

मैं अल्लाह के तमाम कलिमात के ज़रिए पनाह लेता हूँ जिनसे आगे ना कोई नेक और ना कोई फ़ाजिर बढ़ सकता है. उन तमाम चीज़ों के शर से जो आसमान से उतरती हैं और जो आसमान में चढ़ती हैं और रात व दिन के फ़ितनों के शर से और रात को हर आने वाले के शर से सिवाए उसके जो ख़ैर के साथ आए,ऐ निहायत रहम करने वाले.

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

13 اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ الَّتِیْ لَا یُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّلَا
فَاجِرٌ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَذَرَاَ وَبَرَاَ وَمِنْ شَرِّ مَا یَنْزِلُ مِنَ
السَّمَاءِ وَمِنْ شَرِّ مَا یَعْرُجُ فِیْهَا وَمِنْ شَرِّ مَا ذَرَاَ فِی الْاَرْضِ
وَبَرَاَ وَمِنْ شَرِّ مَا یَخْرُجُ مِنْهَا وَمِنْ شَرِّ فِتَنِ اللَّیْلِ وَالنَّهَارِ
وَمِنْ شَرِّ کُلِّ طَارِقٍ اِلَّا طَارِقًا یَّطْرُقُ بِخَیْرٍ یَّا رَحْمٰنُ

(السلسلة الصحیحة:840)

मैं अल्लाह के उन तमाम कलिमात के साथ पनाह चाहता हूँ जिनसे आगे ना कोई नेक और ना बुरा शख़्स बढ़ सकता है,हर उस(चीज़ के)शर से जिसे उसने पैदा किया, फैलाया और बनाया और हर उस चीज़ के शर से जो आसमान से नाज़िल होती है और उस चीज़ के शर से जो उसमें चढ़ती है और उस चीज़ के शर जिसे उसने ज़मीन में फैलाया और बनाया और उस चीज़ के शर से जो उस(ज़मीन)से निकलती है और रात और दिन के फ़ितनों के शर से और हर रात को आने वाले के शर से सिवाए उस के जो ख़ैर के साथ आए,ऐ निहायत रहम फ़रमाने वाले.

14 اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمَاوَاتِ وَرَبَّ الْاَرْضِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ
رَبَّنَا وَرَبَّ کُلِّ شَیْءٍ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوٰی وَمُنْزِلَ التَّوْرَاةِ
وَالْاِنْجِیْلِ وَالْفُرْقَانِ، اَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّ کُلِّ شَیْءٍ اَنْتَ
اٰخِذٌ بِنَاصِیَتِهِ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الْاَوَّلُ فَلَیْسَ قَبْلَکَ شَیْءٌ، وَاَنْتَ
الْاٰخِرُ فَلَیْسَ بَعْدَکَ شَیْءٌ، وَاَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَیْسَ فَوْقَکَ
شَیْءٌ، وَاَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَیْسَ دُوْنَکَ شَیْءٌ اقْضِ عَنَّا الدَّیْنَ
وَاَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ (صحیح مسلم:6889)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ऐ अल्लाह ! ऐ आसमानों के रब ! और ऐ ज़मीन के रब ! और अर्शे अज़ीम के रब ! ऐ हमारे रब और हर चीज़ के रब ! दाने और गुठली को फाड़ने वाले ! ऐ तौरात, इन्जील और फ़ुरक़ान(क़ुरआन) को नाज़िल करने वाले,मैं हर शर वाली चीज़ से तेरी पनाह लेता हूँ जिसकी पेशानी तू ही पकड़े हुए है. ऐ अल्लाह ! तू सबसे पहले है,तुझसे पहले कोई ना था. तू सबसे आख़िर है तेरे बाद कुछ ना होगा.तूही हाज़िर है तुझसे ज़्यादा ज़ाहिर कोई नहीं और तूही पोशीदा है तुझसे पोशीदा तर कोई नहीं-हमसे क़र्ज़ अदा करदे और हमें मोहताजी से बेपरवा करदे.

15 بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی
السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ (سنن أبی داؤد:5088)

अल्लाह के नाम से,वो ज़ात जिसके नाम के साथ कोई चीज़ ज़मीन में और आसमान में नुक़्सान नहीं दे सकती और वो ख़ूब सुनने वाला,ख़ूब जानने वाला है.

16 لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِیْکَ لَهُ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ
وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ (صحیح البخاری:3293) (100 बार)

अल्लाह के सिवा कोई माअबूद नहीं,वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं,उसी के लिए बादशाहत है और उसी के लिए सब तारीफ़ है और वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है.

अपना हाथ दर्द वाली जगह पर रखकर तीन बार कहे फिर सात बार ये दुआ पढ़े.

17
بِسْمِ اللّٰهِ (3 बार)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا اَجِدُ وَاُحَاذِرُ (7 बार)

(صحيح مسلم:5737)

अल्लाह के नाम के साथ-मैं अल्लाह और उसकी क़ुदरत की पनाह लेता हूं,उस चीज़ के शर से जिसको मैं पाता हूं और जिससे मैं डरता हूं.

मरीज़ पर दम करते हुए पढ़ें. 18

اَذْهِبِ الْبَاْسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ اَنْتَ الشَّافِیْ لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَاؤُکَ شِفَاءً لَّا یُغَادِرُ سَقَمًا (صحيح مسلم:5707)

ऐ लोगों के रब ! तकलीफ़ को दूर करदे और शिफ़ा अता फ़रमा,तू ही शिफ़ा देने वाला है,तेरी शिफ़ा के सिवा कोई शिफ़ा नहीं,एसी शिफ़ा(अता फ़रमा)जो बीमारी को बाक़ी ना छोड़े-

اَسْاَلُ اللّٰهَ الْعَظِیْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ اَنْ یَّشْفِیَکَ (7 बार) 19

(سنن أبی داؤد:3106)

मैं अज़मत वाले अल्लाह से,अर्शे अज़ीम के रब से सवाल करता हूँ कि वो तुझे शिफ़ा दे-

اِمْسَحِ الْبَاْسَ رَبَّ النَّاسِ بِیَدِکَ الشِّفَاءُ لَا کَاشِفَ لَهٗ اِلَّا 20
اَنْتَ (صحيح البخاری:5744)

ऐ लोगों के रब ! (इस)तकलीफ़ को दूर फ़रमा,शिफ़ा तेरे हाथ में है, तेरे अलावा इसे कोई दूर करने वाला नहीं.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

21 بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْکَ مِنْ کُلِّ شَیْءٍ يُّؤْذِيْکَ مِنْ حَسَدِ
حَاسِدٍ وَمِنْ کُلِّ عَيْنٍ اَللّٰهُ يَشْفِيْکَ (سنن ابن ماجه:3527)

मैं अल्लाह के नाम के साथ आपको दम करता हूँ हर उस चीज़ से जो आपको अज़ियत दे,हसद करने वाले के हसद से और हर बुरी नज़र के(शर) से,अल्लाह आपको शिफ़ा दे-

22 بِاسْمِ اللّٰهِ يُبْرِيْکَ وَمِنْ کُلِّ دَاءٍ يَّشْفِيْکَ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ
اِذَا حَسَدَ وَشَرِّ کُلِّ ذِیْ عَيْنٍ (صحيح مسلم:5699)

अल्लाह के नाम के साथ जो आपको सहत अता करता है,वो हर बीमारी से आपको शिफ़ा दे और हसद करने वाले के शर से जब वो हसद करे और हर बुरी नज़र के शर से-

23 بِاسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْکَ مِنْ کُلِّ شَیْءٍ يُّؤْذِيْکَ مِنْ شَرِّ کُلِّ
نَفْسٍ اَوْعَيْنِ حَاسِدٍ،اَللّٰهُ يَشْفِيْکَ بِاسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْکَ
(صحيح مسلم :5700)

मैं अल्लाह के नाम के साथ आपको दम करता हूँ हर उस चीज़ से जो आपको अज़ियत दे,हर नफ़्स के शर से या हासिद की नज़र के शर से,अल्लाह आपको शिफ़ा दे,अल्लाह के नाम के साथ मैं आप पर दम करता हूँ.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

AlHuda Welfare Trust India

Post Box Number 444,Basavanagudi Bangalore 560004 ,India

+918040924255. | +91-9535612224

alhuda.india@gmail.com

website: www.farhathashmi.com

AL-HUDA
Publications (Pvt) Ltd.